पटना साइंस कॉलेज में हुआ झंडोत्तोलन

पटना| पटना विश्वविद्यालय का केंद्रीयकृत स्वतंत्रता दिवस समारोह पटना साइंस कॉलेज में हुआ। इस दौरान एनसीसी कैडेट्स से गार्ड ऑफ ऑनर प्राप्त करने के बाद कुलपति प्रो. रासबिहारी प्रसाद सिंह ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। प्रो. सिंह ने कहा कि भारत की युवा शक्ति ने दुनिया भर में हलचल मचा रखी है। उन्होंने पटना विश्वविद्यालय की पिछले एक वर्ष की उपलब्धियों का भी उल्लेख किया। इस दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए जिसमें अलग अलग कॉलेज के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। समारोह में साइंस कॉलेज के प्राचार्य प्रो. राधाकांत प्रसाद, प्रो. अतुल आदित्य पांडेय, प्रो. शेफाली रॉय आदि मौजूद रहे।

<u>स्वतंत्रता दिवस (अगस्त 15,2018) के अवसर पर माननीय कुलपति का उद्‌बोधन</u>

पटना विश्वविद्यालय के सभी पदाधिकारीगण, विविध संकायों के संकायाध्यक्ष एवं शिक्षकगण, प्राचार्यगण, कर्मचारीगण, शोधर्थिगण, आमंत्रित अतिथिगण, एन०सी०सी० के पदाधिकारी एवं कैडेट्स, एन०एस०एस० के पदाधिकारी एवं वालेंटियर्स, मीडिया

बन्धु, प्रिय विद्यार्थियों एवं वे सभी सज्जनवृंद जो आज के कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने हेतु यहाँ उपस्थित हैं |

मान्यवर, आज भारत का 72वाँ स्वतंत्रता दिवस मनाया जा रहा है | मित्रों, अपने कार्यकाल में, मैं दूसरी बार पटना साइंस महाविद्यालय के प्रांगण में 72वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर झंडोतोलन कर गर्व का अनुभव कर रहा हूँ | मैं इस पावन अवसर पर पटना विश्वविद्यालय की तरफ से आपको तथा सम्पूर्ण भारत के लोगों को बधाई देता हूँ तथा बिहार राज्य और भारत के प्रगति की कामना करता हूँ | ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ संघर्ष कर आज़ादी की प्राप्ति कोई साधारण घटना नहीं थी | भारत के आज़ादी के संघर्ष के दौर में दो प्रकार की विचारधाराओं का उदय हुआ था | दो विचारधाराओं के केन्द्र में क्रमशः महात्मा गाँधी और सुभाष चन्द्र बोस थे | दोनों ही के विचारधारा में विविधिता के बीच एकता का सन्देश था | दोनों ही महापुरुष सब समूह के लोगों को साथ में लेकर चलना चाहते थे | महात्मा गाँधी और सुभाषचन्द्र के साथ हर जाति, धर्म, भाषा और प्रदेश के लोग थे | लेकिन दोनों के राष्ट्रवादी चिंतन में एक बड़ा अन्तर यह था कि गाँधी जी की गति धीमी और क्रमिश: जागरण की प्रवृति पर आधारित था जबकि सुभास चन्द्र बोस तेज़ी से लक्ष्य हासिल करना चाहते थे | वे क्रान्तिकारी प्रवृति के प्रतिक थे | लेकिन दोनों का उदेश्य एक था और वह था भारत की आजादी | चूँकि गाँधी जी सबों को सम्मलित कर आज़ादी की लड़ाई को जनजागरण और जनआन्दोलन का रूप देना चाहते थे इसलिए वे सफल भी हुए और उन्होंने आज़ादी की लड़ाई को कभी भी सिर्फ राजनैतिक आज़ादी के रूप में नहीं देखा | महात्मा गाँधी ने चम्पारण में ही अपने चिंतन की नीवं रख दी थी | नीलहें किसानों पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ गांधीवाद का उदय हुआ उसमें शिक्षा और मुख्यत: स्त्री शिक्षा का प्रसार, छुआछुत की समाप्ति, समभाव समाज की नीवं और शरीर से कपड़े उतार कर वे गरीबों की कतार में मसीहा बनकर उभरें | गांधीवाद की इस व्यावहारिक चिंतन से न सिर्फ आज़ादी प्राप्त हुई वरण सामाजिक, आर्थिक और सांकृतिक विविधता के बीच नविन भारत की नीवं भी रखी गयी | इसका तात्पर्य सुभास चन्द्र बोस के कार्यों की अवहेलना करना नहीं है | गाँधी की सफलता में सुदूर से संवेदन तंत्र के रूप में सुभाष चन्द्र बोस के कार्य और चिंतन सतत् सहायक रहे थे

| आज ऐसे ही महान त्यागी चिंतकों के कार्य से उदित भारत को आगे बढ़ाना हम सबों की जिम्मेवारी है | इस जिम्मेवारी को अग्रसारित करने में विश्वविद्यालय प्रांगण की महती भूमिका है |

मित्रों, विश्वविद्यालय ज्ञान और कर्म की भूमि होती है | यहाँ हर छात्र अर्जुन और हर शिक्षक कृष्ण की भूमिका में होते हैं | पटना विश्वविद्यालय के पिछले 100 वर्षों के इतिहास को देखें तो आपको स्वत: पता चलेगा कि देश की आजादी से लेकर सम्पूर्ण क्रान्ति और आज की तारीख में सूचना तंत्र की क्रान्ति तथा सेवा के विविध क्षेत्रों में मूल्यों की स्थापना के लिए पटना विश्वविद्यालय सदैव आगे रहा है | कभी इसकी पहचान "Oxford of the East" के रूप में थी और आज भी यह सही अर्थों में Brain capital of Bihar के रूप में अपनी पहचान रखती हैं |

आज का भारत 71 वर्ष की जीवन यात्रा पूरा कर चूका है | देश ने सफलता की कई नई गाथाऐं लिखी है और विश्व में अपनी पहचान बनायी है | आज हम न सिर्फ विश्व के सबसे बड़े प्रजातंत्र है वरण विश्व की सबसे बड़ी युवा शक्ति (youth power) भी भारत में ही है | जर्मनी में नारा दिया गया है कि किंडर नॉर इंडर तथा USA में एक कहावत बन चुकी है कि बच्चों, मन से पढ़ो नहीं तो भारतीय आ जायेंगें | इसी युवा शक्ति को संवारना हमारी सबसे बड़ी जिम्मेवारी है | आज सिर्फ उत्साह और उत्सव का ही अवसर नहीं है वरण हमें सोचना होगा कि हम कैसे उत्साह और उत्सव को उध्मता और उतप्रेरणा में बदल सकते हैं |

मित्रों, यह बदलाव सिर्फ हम शिक्षक कर सकते हैं | डॉ राधाकृष्णन लिखते है कि 'Teaching is not a profession, it is a mission' वे आगे भी लिखते है कि "The best set of mind of a country /society lies in the university campus" what is needed is to cultivate it in such a way that the country feels pride on the honesty, discipline, patriotism and professional ethics of each and every citizen of the country.

मित्रों, विश्वविद्यालय का उद्देश्य सिर्फ नामांकन, परीक्षा और उपाधि प्रदान करना नहीं है | हमारी चुनौतियों बहु यामी हैं | हमें भूमंडलीय प्रतिस्पर्धा का अंग बनना है | हमें प्रांगण से बाहर निकलकर सामाजिक जिम्मेदारी के अंतर्गत ग्रामीण विकास और गरीबी उन्मूलन में अपनी भूमका निभानी होगी | हमें देखना होगा कि हमारे विद्यार्थी उम्र के इस चौराहे पर भटकाव के दल-दल में नहीं फंस जायें | कदाचार मुक्त परीक्षा, वर्गों के नियमित संचालन, पारदर्शिता युक्त नामांकन, साफ़-सुथरा वितीय प्रबन्धन और उच्च शिक्षा में हो रहे बदलाव से विश्वविद्यालय को जोड़ना हमारी और आपकी सामूहिक

जिम्मेवारी है | मैं चाहूँगा कि जल्दी से जल्दी पुस्तकालय का automation हो, सभी विभागों तथा महाविद्यालयों में smart classes हों, शिक्षक और विद्यार्थी अपने को swayam e-learning platform से जोड़े ताकि आपका ज्ञान सिर्फ क्लासरूम शिक्षा तक ही नहीं रहे | पिछले एक वर्षों में हमलोगों ने कई नए कार्यों को अंजाम दिया है | पटना विश्वविद्यालय के इतिहास में पहली बार प्रधानमंत्री का आगमन हुआ और उन्होंने हमें प्रतिस्पर्धा की दुनिया में आगे आने का निमंत्रण दिया है | हम सबों ने इस चुनौती को स्वीकार किया है और आपके प्रयास से हमारी कई नवीन उपलब्धियां भी हैं | इस वर्ष के गर्मी छुट्टी में प्राय: अधिकतर शिक्षक और कर्मचारीगण सही अर्थों में छुट्टी भूलकर विश्वविद्यालय को आगे ले जाने में जी जान से लगे रहे | इसका परिणाम है कि हमारा B.A.-III वर्ष का रिजल्ट देश में सबसे पहले आया | हमारे यहाँ समय पर नामांकन प्रक्रिया पूर्ण हुई और शिक्षकों की कमी के बावजूद CBCS स्नातकोतर स्तर पर लागू कर दिया गया है | पटना विश्वविद्यालय के NAAC accreditation का कार्य भी पुरे जोर से चल रहा है और इस वर्ष के अंत तक accreditation की पूरी सम्भावना है | शताब्दी वर्ष के दौरान Centenary Run, Alumni meet, Retired teachers and Employees meet, विविध प्रकार के खेल-कूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की सफलता भी पिछले एक वर्ष की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ है | वर्तमान समय में मगध महिला कॉलेज की एक छात्रा एन०सी०सी० कैडेट के रूप में कज़ाकस्तान गयी थी | उसने वहाँ पर भारत का प्रतिनिधित्व किया | इसी प्रकार मनोविज्ञान विभाग के P.G. Course में रोमानिया की एक छात्रा ने नामांकन लिया है | Full Bright Fellowship के अंतर्गत दो छात्रों को शोध हेतु मान्यता मिली है | इसी प्रकार प्राय: सभी विभागों और महाविद्यालयों में अंतरराष्ट्रीय,राष्ट्रिय और क्षेत्रीय सेमिनार कराये गये | सांस्कृतिक संध्या, मनोज बाजपेयी कृत चाणक्य नाटक तथा गाँधी पर प्रस्तुत मौन एकांकी दर्शकों को दिल तक छुने के लिए पर्याप्त था | 'उन्नत भारत अभियान ' के अंतर्गत पटना विश्वविद्यालय का चयन, National Council of Rural Institutes, Hyderabad द्वारा महात्मा गाँधी के 150वें जन्मदिवस के अवसर पर Rural Studies में रूचि रखने वाले छात्रों को छात्रवृति देने का निर्णय तथा केन्द्र सरकार के Rural Development मंत्रालय द्वारा पटना विश्वविद्यालय को ग्रामीण विकास कार्यक्रमों से जोड़ेने का निर्णय हमारे लिए गौरव की बात है | त्रिभुवन विश्वविद्यालय,नेपाल सहित कई संस्थायों से शोधकार्य हेतु MoU की प्रक्रिया जारी है | मित्रों, यह सभी आपके सहयोग से संभव हो रहा है और आज के पुनीत अवसर पर मैं सभी शिक्षकों, कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों को इसके लिए पुन: बधाई देता हूँ |

शताब्दी वर्ष में छात्र संघ का चुनाव भी एक बड़ी उपलब्धि है | आशा है कि शीघ्र ही सत्र 2018-19 के लिए छात्र संघ का चुनाव कराया जाएगा | 25 अगस्त, 2018 को शताब्दी समारोह का समापन कार्यक्रम होगा | इस समय पटना विश्वविद्यालय पर एक स्मारिका (Souvenir) का लोकार्पण होगा तथा शताब्दी डाक टिकट भी जारी किये जायेंगे | किसी भी संस्था के जीवन में ये विरल उपलब्धियाँ हैं और हम सभी इसके गवाह है और शताब्दी वर्ष में विश्वविद्यालय का अंग बनना हम सबों के लिए सतत् यादगार की बात होगी |

मित्रों, उपलब्धियाँ विराम का प्रतिक नहीं होता है वरण ये उड़ान को पंख देती है | इसी उड़ान के अंतर्गत पटना विश्वविद्यालय को National Digital Library से जोड़ा जा चुका है | आप सभी शिक्षकों से आग्रह है कि आप अपना e-mail इस कार्य हेतु उपलब्ध करायें और ज्ञान की गंगा में तैरने के लिए तैयार हो जायें | मैं यह भी स्पष्ट करूँगा कि National Initiatives on Digitization of Higher Education का यह एक अनिवार्य अंग है | इसी प्रकार हम National Academic Depository Process से भी जुड़ गए हैं | इससे हमारे छात्रों को अपना उपाधि प्राप्त करने में तथा विश्वविद्यालय को उपाधि संग्रह का सुरक्षित प्लेटफार्म मिल गया है | Ph.D. में उच्च गुणवता हेतु हम नक़ल (Plagiarism) के खिलाफ भी शीघ्र ही रेगुलेशन बनाने जा रहे हैं | GeM प्रक्रिया के द्वारा विश्वविद्यालय में सारे खरीद से संबंधित कार्य प्रारंभ कर दिए गए हैं | दरभंगा हाउस, Post-graduate Department of Ancient Indian History & Archeology तथा कृष्णा कुंज का पुननिर्माण कार्य जोरों पर चल रहा है | गोलकपुर क्षेत्र को अतिक्रमण से मुक्त कराया गया है और वहाँ 1500 की क्षमता का एक परीक्षा केन्द्र तथा Faculty of Humanities के लिए अलग से एक भवन का निर्माण होगा | वर्षों बाद "संवाद" त्रैमासिक News Bulletin प्रारंभ हो चुका है | शीध्र ही पटना विश्वविद्यालय का Research Journal आपके हाथ में होगा | पटना विश्वविद्यालय के इतिहास पर इस वर्ष एक पुस्तक का भी विमोचन हो चुका है | हम चार महत्वपूर्ण नयी योजनाओं को शीघ्र ही अंजाम देना चाहते हैं | ये हैं

i. Automation of Patna University Library

ii.Computer based integrated University Management system

iii. Establishment of Incubation Centre

iv. Adoption of five villages as a part of Social responsibility.

इनके कार्यान्वयन से विश्वविद्यालय को एक नवीन पहचान मिलेगी और हम National Institutional Ranking की प्रतिस्पर्धा के अगली कतार में हो सकेंगे |

मित्रों, जिस त्याग और उदेश्य के साथ संघीय भारत की नीवं रखी गयी थी, उसके सामने आज आतंकवाद, नक्सलवाद, धार्मिक उन्माद, क्षेत्रीयता और सीमांत क्षत्रों में यत्र-तत्र विमाजक प्रवृतियों का उदय चिंता का विषय है | ये प्रवृतियाँ भारतीय राष्ट्रवाद और अन्ततः विकाश के मार्ग में बाधक हैं | जिस समय भारत (1947) आजाद हुआ, लगभग उसी समय दक्षिणी कोरिया (1948) एवं इजराइल (1949) भी आजाद हुआ था | आज दक्षिण कोरिया और इजराइल राष्ट्रिय एकता और विकास के लिए रोल मॉडल (Role Model) बन चुके हैं | इसके विपरीत हमारे यहाँ वे प्रवृतियाँ पनपने लगीं है जो गाँधी और सुभास के सपनों के भारत को विचलित कर रहा है |जर्मन भूराजनीतिक वैज्ञानिक रेटजल ने लिखा है कि राष्ट्रवाद किसी देश की मृदा में निहित होता है | जो देश इसकी खेती करता है वहाँ राष्ट्रवाद के फसल लहलहाते है और वैसे देशों की हस्ती को मिटाना किसी के लिए आसान नहीं होती है | इजराइल और दक्षिण कोरिया ने इसे साबित कर दिया है | आज भारत के लिए भी आवश्यक है कि वे एक ऐसे राष्ट्रवाद की खेती करें जिसमें सबों को अपनेपन का अनुभव हो और सभी मिलकर विकास की नयी गाथा लिख सकें | पटना विश्वविद्यालय ने अपने 100 वर्षों के इतिहास में ऐसी अनेक गाथाऐं लिखी है और आज भी हम इस जिम्मेवारी से मुकर नहीं सकते है |

मैं अपने शिक्षकों और कर्मचारी बन्धुयों को स्पष्ट करना चाहता हूँ कि शीघ्र ही उन्हें नियमानुसार प्रोन्नति दी जाएगी | अनुकम्पा के आधार पर बचे हुए आवेदकों की भी शीघ्र नियुक्ति होगी और शिक्षकों को प्रोन्नति स्टेच्युटस में आवश्यक सुधार कर रीडर को एसोसियेट प्रोफेसर के पद पर मान्यता दी जाएगी |

मैं आशावादी हूँ | मुझे पूर्ण विश्वास है कि छात्र, शिक्षक, कर्मचारी, अभिभावक और पूर्ववर्ती छात्र पटना विश्वविद्यालय रूपी विशाल शैक्षणिक संवाद के पांच स्तम्भ

हैं | एक दुसरे के पूरक हैं और सभी स्तम्भों को सम्मान देना और उनसे सहयोग लेना हमारी प्राथमिकता होगी | इन्हीं शब्दों के साथ आप सबों को एक बार फिर बधाई और शुभकामनायें |

जय हिन्द | जय भारत | जय पटना विश्वविद्यालय |